डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त' के बारे में



'उरतृप्त' उपनाम से व्यंग्य जगत में प्रसिद्ध डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा अपनी भावनाओं और विचारों को अत्यंत ईमानदारी और गहराई से अभिव्यक्त करते हैं। उनकी बहुमुखी प्रतिभा का प्रमाण उनके लेखन के विभिन्न क्षेत्रों में उनके योगदान से मिलता है। वे न केवल एक प्रसिद्ध व्यंग्यकार हैं, बल्कि एक कवि और बाल साहित्य लेखक भी हैं। उनके व्यंग्य लेखन ने उन्हें एक विशेष पहचान दिलाई है। उनका व्यंग्य 'शिक्षक की मौत' साहित्य आजतक चैनल पर अत्यधिक वायरल हुआ, जिसे लगभग दस लाख से अधिक बार पढ़ा और देखा गया, जो हिंदी व्यंग्य के इतिहास में एक अभूतपूर्व कीर्तिमान है। उनका व्यंग्य-संग्रह 'एक तिनका इक्यावन आँखें' भी काफी प्रसिद्ध है, जिसमें उनकी कालजयी रचना 'किताबों की अंतिम यात्रा' शामिल है। इसके अतिरिक्त 'म्यान एक, तलवार अनेक', 'गपोड़ी अड्डा', 'सब रंग में मेरे रंग' भी उनके प्रसिद्ध व्यंग्य संग्रह हैं। 'इधर-उधर के बीच में' तीसरी दुनिया को लेकर लिखा गया अपनी तरह का पहला और अनोखा व्यंग्य उपन्यास है। साहित्य के क्षेत्र में उनके योगदान को तेलंगाना हिंदी अकादमी, तेलंगाना सरकार द्वारा श्रेष्ठ नवयुवा रचनाकार सम्मान, 2021 (मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव के हाथों) से सम्मानित किया गया है। राजस्थान बाल साहित्य अकादमी के द्वारा उनकी बाल साहित्य पुस्तक 'नन्हों का सृजन आसमान' के लिए उन्हें सम्मानित किया गया है। इनके अलावा, उन्हें व्यंग्य यात्रा रवींद्रनाथ त्यागी सोपान सम्मान और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों साहित्य सृजन सम्मान भी प्राप्त हो चुका है। डॉ. उरतृप्त ने तेलंगाना सरकार के लिए प्राथमिक स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय स्तर पर कुल 55 पुस्तकों को लिखने, संपादन करने और समन्वय करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बिहार, छत्तीसगढ़, तेलंगाना की विश्वविद्यालयी पाठ्य पुस्तकों में उनके योगदान को रेखांकित किया गया है। कई पाठ्यक्रमों में उनकी व्यंग्य रचनाओं को स्थान दिया गया है। उनका यह सम्मान दर्शाता है कि युवा पाठक गुणवत्तापूर्ण और प्रभावी लेखन की पहचान कर सकते हैं।



ISBN: 978-81-23010-01-5

पुस्तक का नाम

चिट्ठी

लेखक

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'

प्रकाशक:

संकल्प प्रकाशन

वर्ष 2014

मुद्रक:

साक्षी ऑफसेट, कानपुर

CHITTHI

By: Dr. Suresh Kumar Mishra 'Uratript' Price: 60/-



उस छोटे से रेलवे स्टेशन पर, जहाँ ट्रेनें बस एक पल को रुकती थीं, एक बूढ़ी माँ रोज़ खड़ी होती थी। उनका नाम था स्नेहा।



उनके हाथ में हमेशा एक पुरानी, मुड़ी हुई तस्वीर होती थी। यह तस्वीर थी उनके बेटे अर्जुन की, जो दूर देश की रक्षा के लिए गया था।



अर्जुन ने वादा किया था: "माँ, मैं ज़रूर लौटूंगा। मेरी चिट्ठी का इंतज़ार करना।" स्नेहा इंतज़ार करती थीं, हर आती-जाती ट्रेन में एक उम्मीद ढूंढती थीं।



एक दिन, जब ट्रेन रुकी, तो एक थका हुआ, धूल भरा सैनिक नीचे उतरा। वह माँ के पास आया। उसका नाम था संदेश।



संदेश ने धीरे से पूछा, "माँ, आप किसका इंतज़ार कर रही हैं?" स्नेहा ने काँपती आवाज़ में वही बात दोहराई, “जो वादा करके गया था... लौटने का।”



संदेश ने स्नेहा के हाथ में वह पुरानी तस्वीर देखी। उनकी आँखें तुरंत नम हो गईं। यह तस्वीर उनके दोस्त अर्जुन की थी।



संदेश ने अपना सिर झुकाया और दबे स्वर में कहा, "वो... वो मेरे साथ था... आखिरी साँस तक 'माँ' कहता रहा।"



स्नेहा ने संदेश के कंधे पर अपना हाथ रखा। खबर भयानक थी, लेकिन संदेश की आँखों में उन्हें अपने बेटे का प्यार दिखाई दिया।



स्नेहा के होंठ मुस्कराए,
लेकिन उनकी आँखों से गरम
आँसू बहने लगे। यह आँसू
दुःख के नहीं थे, बल्कि एक
ऐसे प्रेम के थे जो कभी खत्म
नहीं होगा।



उन्होंने संदेश की आँखों में देखते हुए कहा, "अर्जुन चला गया, पर अब मैं रोज़ उसकी चिट्ठी बनकर जीती हूँ।" और हर सुबह, स्नेहा का इंतज़ार उस स्टेशन पर एक शाश्वत प्रेम कहानी बन गया।